MAA OMWATI INTERNATIONAL

EDUCATION CITY

V.P.O. Hassanpur, Teh. Hodal Distt. Palwal

(HR.)

NOTES

B.A 3RD SEM

Sub:- HISTORY

B.A - IIIrd Sem.
History.

Date: / /

मुगल साम्राज्य का पतन एवं उत्तराधिकारी राज्यों का उत्थान

Ques - उत्तर मुगलकालीन सम्राटों पर निबंध लिखिए और राजपूतों व सिक्खों से इनके संबंध कैसे थे व साम्राज्य के पतन के कारणों का वर्णन कीजिए ?

* भूमिका :-

बाबर तथा हुमायूँ ने मुगल साम्राज्य रूपी भवन की आधारशिला रखी, तथा अकबर ने अपनी योग्यता से इसे सुदृढ़ता एवं स्थायित्व प्रदान किया। लगभग तीन शताब्दियों तक भारत के एक विशाल भू-भाग पर मुगलों का वर्चस्व बना रहा। परंतु औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही साम्राज्य की शक्ति एवं प्रतिष्ठा में तेजी से गिरावट आई। पश्चिमोत्तर भाग से विदेशी आक्रमण होने लगे जो मुगल साम्राज्य रूपी ढाँचे के लिए हानिकारक सिद्ध हुए।

* उत्तरकालीन मुगल सम्राट :-

औरंगजेब ने अपनी मृत्यु से पहले एक 'वसीयतनामा' लिखा था। लेकिन यह भी उसके पुत्रों के बीच उत्तराधिकार के युद्ध को नहीं टाल सका। औरंगजेब के उत्तराधिकारी मुगल सम्राटों का विवरण इस प्रकार है —

* बहादुर शाह प्रथम :-

बहादुर शाह प्रथम जिसका वास्तविक नाम 'मुअज्जम' था अपने दो भाईयों आजम और कामबख्श को मारकर

Scanned with OKEN Scanner

Date: / /

गद्दी पर बैठा । यह 63 वर्ष की आयु में शासक बना था । इसने अपने विरोधी व्यक्तियों को भी माफ करके ऊँचे - ऊँचे पद दिए थे ।

* **सैय्यद बंधुओं का उदय** :- दो सैय्यद भाई अब्दुल्ला खाँ और हुसैन अली खाँ दोनों सैय्यद भाईयों के नाम से प्रसिद्ध थे । इन्हें शासक निर्माता भी कहा जाने लगा । इन्होंने कई शासकों को गद्दी से उतारा व बैठाया था जिनमें बहादुरशाह , फर्रुखशियर , रफी - उद - दरजात , रफी - उद् - दौला तथा मोहम्मदशाह रंगीला प्रमुख थे ।

* **मुहम्मदशाह रंगीला** :- इसे सैय्यद बंधुओं ने ही शासक बनाया था । इसका शासनकाल 1719 से 1748 था । इसी के काल में सैय्यद बंधुओं का पतन हुआ । यह उन्हें ऊपरी तौर पर पूर्ण आदर देता था परन्तु आन्तरिक तौर पर उनके विनाश के षड्यन्त्र रचने लगा । यह एक विलासी , अयोग्य निकम्मा शासक था ।

* **नादिरशाह का आक्रमण** :- मोहम्मदशाह के समय ईरानी योद्धा नादिरशाह ने देश पर आक्रमण कर दिया । इसने 1739 में आक्रमण किया था । नादिरशाह ने

दिल्ली में कत्लेआम का आदेश दे दिया। वह यहाँ से असंख्य हीरे जवाहरात, तख्ते ताउस तथा प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा लूट कर ले गया।

* **अहमदशाह :-** (1748-54)
यह मोहम्मद शाह का पुत्र था जो 1748 में गद्दी पर बैठा। इसी के शासनकाल में नादिरशाह के सेनापति अहमदशाह अब्दाली ने आक्रमण कर दिया। यह भी यहाँ से खूब माल लूटकर ले गया। अहमदशाह एक अयोग्य व कायर शासक था।

* **आलमगीर द्वितीय** (1754-59) :-
आलमगीर II गद्दी पर 55 वर्ष की उम्र में बैठा था। उसका अधिकांश जीवन बंदीगृह में व्यतीत हुआ। इसे युद्ध व प्रशासन का अनुभव था। यह पुस्तकें पढ़ने का शौकीन था। वह पाँचों समय नमाज पढ़ता था। वह अपने शासनकाल के दौरान वजीर इमाद-उल-मुल्क के हाथों की कठपुतली बना रहा।

* **शाह आलम द्वितीय :-** (1759-1806)
इसने अपने पिता की मृत्यु का समाचार सुनते ही 1759 में स्वयं को सम्राट घोषित कर दिया तब यह बिहार में था। ये लगभग 12 वर्ष पूर्वी प्रान्तों में ही रहा। इस बीच दिल्ली की गद्दी खाली पड़ी रही।

Scanned with OKEN Scanner

* बक्सर का युद्ध :-
1764 में बक्सर के युद्ध में शाहआलम पराजित हुआ तथा 1765 में इलाहाबाद की संधि के अनुसार उसे अंग्रेजों को बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी देनी पड़ी। और कंपनी उसे 26 लाख Rs पेंशन वार्षिक देती थी।

* बहादुरशाह द्वितीय :-
यह अकबर II के बाद सम्राट बना। इसने 1857 की क्रांति में भाग लिया। क्रांति की असफलता के बाद उसे रंगून भेज दिया गया। 1862 में इसकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार मुगल वंश का अंत हो गया।

* मुगल साम्राज्य के पतन के कारण :-
केन्द्रीय शासन की कमजोरी की वजह से साम्राज्य की राजनीतिक सीमाएँ कम होने लगी। प्रान्त स्वतंत्र होने लगे। नियंत्रण अमीर वर्ग के हाथों में आ गया। और बाहरी आक्रमणों से स्थिती और बिगड़ गई।

* जागीरदारी संकट :-
जागीरदारी व मनसबदारी प्रथा शाहजहाँ के शासनकाल तक ठीक चली लेकिन औरंगजेब के शासनकाल से ही इसमें दोष आने लगे। इसने मराठों और दक्षिणी राजाओं को अपने साथ मिलाने में जागीरों का लालच दिया। जिससे पुराने

Scanned with OKEN Scanner

जागीरदार स्वतंत्र हो गए। जिससे दरबार में गुटबाजी बढ़ी और सैनिक शक्ति पर भी बुरा असर पड़ा

* **स्वेच्छाचारी एंव निरंकुश शासन पद्धति :-** शासन की अधिकांश शक्तियाँ सम्राटों के हाथों में थी। शासन की नीतियों का निर्धारण स्वंय सम्राट करता था। शासन पद्धति शासक की व्यक्तिगत शक्ति पर आधारित था। जिस कारण अयोग्य शासकों के काल में इसका पतन होना निश्चित था

* **उत्तराधिकार के नियम का अभाव :-** मुगलों में इस प्रकार का कोई नियम नहीं था कि बादशाह के बाद उत्तराधिकारी कौन होगा? जिस कारण पुत्रों में युद्ध छिड़ जाता था जो विजय होता था वह शासक बनता था अपने भाईयों को मौत के घाट उतारने के बाद।

* **मुगल अमीरों व सरदारों का चरित्र हीन होना :-** औरंगजेब के बाद सारे सम्राट व उनके अमीर मंत्री सभी विलासी, चरित्रहीन व अयोग्य थे।

* **अमीरों के षड्यंत्र :-** बाद के सम्राटों का अमीर वर्ग इतना शक्तिशाली हो गया की शासन में प्रत्यक्ष भागीदारी लेता था। सैय्यद बंधुओं को तो सम्राट निर्माता कहा जाता था।

Date: / /

* साम्राज्य का आर्थिक दिवालियापन :-

शाहजहाँकालीन भव्य-भवनों के निर्माण तथा दरबारी साज-सज्जा ने अर्थव्यवस्था को कमजोर बना डाला। औरंगजेब कालीन दक्षिण युद्धों ने साम्राज्य को बुरी तरह कमजोर बना डाला।

* मुगल साम्राज्य की विशालता :-

अकबर व औरंगजेब के काल में साम्राज्य का खूब विस्तार हुआ। उनका साम्राज्य हिंदुकुश पर्वत से कावेरी तक और पूर्व में बंगाल की खाड़ी से अरब सागर तक था। इसकी विशालता प्रशासनिक अव्यवस्था का कारण बनी।

* औरंगजेब के दुर्बल तथा अयोग्य उत्तराधिकारी :-

औरंगजेब के बाद के सम्राट विलासी, चरित्रहीन, कायर थे। ये तलवार से अधिक शराब और शबाब से प्यार करते थे। जिससे साम्राज्य का पतन होना स्वाभाविक था।

* औरंगजेब का उत्तरदायित्व :-

औरंगजेब ने अविवेकपूर्ण कार्यों एवं नीतियों ने मुगल साम्राज्य के पतन की प्रक्रिया को तेज किया जिनमें उसकी हिंदू विरोधी नीति, दक्षिण नीति, शियाओं पर अत्याचार, व उसका सन्देहशील स्वभाव प्रमुख था। कृषि की दशा बिगड़ने से उनका राज कोष भी रिक्त हो गया था।

Date: / /

* ## यूरोपीय शक्तियों का आगमन :-

17 वी शताब्दी में कई यूरोपिय शक्तियाँ जैसे - पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी तथा अंग्रेज भारत में व्यापार करने के लिए आयी थी। लेकिन ईस्ट इंडिया कंपनी ने राजनैतिक कार्यों में हस्तक्षेप करके व युद्ध करके सम्पुर्ण नियंत्रण अपने हाथों में ले लिया 1857

* ## क्षेत्रीय राज्यों का उत्थान :-

औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल सम्राटों की शक्तियाँ कमजोर हो गई। अमीरों के षड्यंत्र से सरकार का प्रान्तों पर नियंत्रण कम हो गया। और पंजाब, अवध, हैदराबाद, मैसूर राज्यों का उत्थान हुआ।

* ## निष्कर्ष :-

18 वी सदी के मध्य में केन्द्रीय शक्ति का पतन होने का कारण यह था की भारत में कई नए राज्यों का उत्थान जो कि आपस में लड़ते रहते थे। मराठों का प्रभाव देश के बड़े क्षेत्र में फैल गया। फिर यूरोपियों शक्तियों के आगमन से साम्राज्य का पतन हो गया।

Scanned with OKEN Scanner

Question- बक्सर का युद्ध, कारण, घटनाएं एवं परिणामों का वर्णन करें।

* भूमिका -

इतिहासकार यह मानते हैं कि जिस प्रकार मीर जाफर ने सिराजुद्दौला से विश्वासघात किया था उसी का ही फल है कि मीर कासिम ने मीर जाफर से विश्वासघात किया। यह अधिक समय तक अंग्रेजों से अच्छा तालमेल स्थापित न कर सका अतः विवश होकर अंग्रेजों से बक्सर का युद्ध करना पड़ा।

* कारण -

बक्सर के युद्ध के कारण निम्नलिखित हैं।

* योग्य नवाब —

मीर कासिम एक योग्य नवाब था। वह शासकीय समस्याओं को सुलझाने की विशेष क्षमता रखता था।

* कठपुतली समझना एक भ्रम :-

अंग्रेजों ने मीर कासिम को इसलिए नवाब बनाया था कि यह उनकी कठपुतली बनकर रहेगा। परंतु यह उनका भ्रम था।

* अंग्रेजों से संधि :-

मीर कासिम को जो 1760 ई० में अंग्रेजों से संधि हुई थी

उसे वित्तीय कठिनाई के कारण मीर कासिम ने नहीं माना अतः यह बक्सर के युद्ध का आधार बना।

* **युद्ध सामग्री से भरी नावों को रोकना :** मीर कासिम ने अंग्रेजों की नावों को जो युद्ध सामग्री से भरी पटना जा रही थी उन्हें मुंगेर में रोक लिया। जिससे अंग्रेज नष्ट हुए और उन्होंने नवाब पर आक्रमण किया।

* **राजधानी परिवर्तन :** मीर कासिम ने राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थापित की और इसकी किलेबंदी करवाई। यहाँ अस्त्र शस्त्र का कारखाना खोला जिससे अंग्रेज नष्ट हो गए।

* **पटना हत्याकाण्ड :** मीर कासिम ने पटना में अंग्रेज सेना के लगभग 150 कैदियों को तलवार के घाट उतरवा दिया। जिससे अंग्रेजी सेनापति ने नवाब पर आक्रमण कर दिया जो युद्ध का कारण बना।

* **आन्तरिक व्यापारिक करों को समाप्त :** नवाब ने आन्तरिक व्यापारिक करों को समाप्त कर दिया उससे अंग्रेज ने नवाब का विरोध किया। नवाब ने अंग्रेजों के दबाव को न माना जिससे दोनों में संघर्ष हुआ।

Date: / /

* घटना —
अंग्रेजों ने 1763 ई० में बंगाल के नवाब मीर कासिम को पद से हटाया तो उसे अपनी सुरक्षा के लिए अवध भागना पड़ा। वहाँ इसने शुजाउद्दौला व मुगल सम्राट शाह आलम के साथ सम्बंध स्थापित किए।

* बंगाल पर आक्रमण :—
अक्टूबर 1764 में ही तीनों ने बंगाल पर आक्रमण कर दिया अंग्रेजों की ओर से हेक्टर मुनरो का सामना करना पड़ा। यहां तीनों शासकों की हार हुई।

* सेना — युद्ध में तीनों शासकों के लगभग 50 हजार सैनिक व अंग्रेजों के 7k सैनिक थे। जिनमें तीनों शासकों के 2000 सैनिक मरे और अंग्रेजों के केवल 900। शुजाउद्दौला और शाह आलम दोनों को अंग्रेजों के सम्मुख आत्मसमर्पण करना पड़ा।

* युद्ध के परिणाम :—
बक्सर का युद्ध एक निर्णायक युद्ध था। इस युद्ध ने प्लासी के निर्णयों की पुष्टि कर दी। इसके परिणाम निम्नलिखित हैं —

Scanned with OKEN Scanner

Date: / /

* 1. बक्सर के युद्ध ने मुगल शासकों की कमजोरी की पोल खोल दी।
* 2. इस युद्ध के पश्चात शाह आलम द्वितीय अंग्रेजों का पेंशनधारी हो गया।
* 3. बक्सर के युद्ध के उपरान्त अंग्रेजों को बंगाल, बिहार व उड़ीसा की दीवानी मिली जिससे आय अधिक बढ़ी।
* 4. इस युद्ध से अंग्रेजों के लिए दिल्ली का मार्ग खुला।
* 5. क्लाइव 1757 ई० में बंगाल का गवर्नर बना। इलाहाबाद की संधि क्लाइव की एक महान उपलब्धि मानी जाती है।

निष्कर्ष –

इस युद्ध के बाद अंग्रेजों का राजनीति में हस्तक्षेप हो गया। शासन उनके अधीन चला गया। फिर फ्रांसीसी और रूस को हराकर यह यहाँ पर स्थानीय शासन स्थापित करने में सफल रही।

Scanned with OKEN Scanner

Question - प्लासी का युद्ध, कारण, घटनाएँ एवं परिणामों का वर्णन करें।

* भूमिका -
इस युद्ध से ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कंपनी द्वारा बंगाल को अपने अधीन करने की प्रक्रिया का आरम्भ माना जाता है। इस युद्ध के लिए अब क्लाइव ने षड्यन्त्र व युद्ध के बहाने तलाश करने आरम्भ किए।

* कारण -
मुगल शासक औरंगजेब की मृत्यु के बाद भारत में अराजकता फैल गई। इस स्थिति का लाभ उठाते हुए बंगाल के सूबेदार अलीवर्दी खाँ, मोहम्मदशाह रंगीला के समय 1741 में शासक बना।

* उत्तराधिकारी संबंधी समस्या :-
अलीवर्दी खाँ का कोई पुत्र नहीं था। उसने अपनी छोटी पुत्री का लड़का गोद ले लिया। जिसे बड़ी बेटी और उसके पुत्र ने उत्तराधिकारी मानने से इंकार कर दिया।

* मीर जाफर का षड्यंत्र :-
सिराजुद्दौला के एक सेनापति मीर जाफर ने षड्यन्त्र कर दिया उसने युद्ध में अंग्रेजों का साथ दिया। अंग्रेजों ने उसे नवाब बनाने का लालच दिया था।

Scanned with OKEN Scanner

Date: / /

* **कलकत्ता की किलेबन्दी ÷**

नवाब की आज्ञा के बिना अंग्रेजों द्वारा कलकत्ता की किलेबन्दी करना भी इसका कारण था।

* **नवाब द्वारा अधिकार ÷**

नवाब द्वारा कासिम बाजार की कोठी व कलकत्ता की कोठी और फोर्ट विलियम पर अधिकार करना भी युद्ध का कारण बना।

* **ब्लैक होल की घटना ÷**

ब्लैक होल या काल कोठरी की दुर्घटना भी नवाब व अंग्रेजों के सम्बन्ध बिगाड़ने में सहायक रही।

* **फ्रांसीसियों पर विजय करना –**

क्लाइव को संदेह था कि कहीं नवाब फ्रांसीसियों से न मिल जाए। अतः मार्च 1757 ई० में क्लाइव ने चन्द्रनगर पर आक्रमण किया व जीत लिया।

* **तत्कालिक कारण ÷**

क्लाइव ने नवाब पर अलीनगर की संधि को पूरा न करने का आरोप लगाया।

Scanned with OKEN Scanner

* घटनाएँ :-

12 जून 1757 को क्लाइव ने मुर्शिदाबाद के दक्षिण को कूच किया। जो 23 June को प्लासी गाँव नामक स्थान पर नवाब की सेना के आमने सामने डटी।

* सेना :-

अंग्रेजों की सेना में लगभग 950 यूरोपीय सैनिक, 100 यूरोपीय तोपची, 50 नाविक तथा 2100 भारतीय सैनिक थे।

नवाब की सेना में 50,000 सैनिक था जिनका नेतृत्व विश्वासघाती सेनापति मीरजाफर ने किया।

* युद्ध के पश्चात - नवाब :-

युद्ध के पश्चात सिराजुद्दौला के स्थान पर मीर जाफर को बंगाल का नवाब बनाया गया। इस एवज में उसने अंग्रेजों को लगभग 1 करोड़ 20 लाख रुपये दिए।

* युद्ध के महत्व / परिणाम :-

प्लासी का युद्ध कहने को तो युद्ध था असलियत में इसे युद्ध कहना अधिक न्यायोचित नहीं है। सैनिक दृष्टिकोण से भी इस युद्ध का भारतीय इतिहास में कोई विशेष स्थान नहीं है।

* राजनीतिक महत्व / परिणाम :-

प्लासी के युद्ध के राजनीतिक परिणाम निम्नलिखित है।

1) इस युद्ध के बाद अंग्रेजों को फिर से व्यापारिक सुविधाएं मिल गई जिससे व्यापार में वृद्धि होने लगी।
2) इस युद्ध के बाद अंग्रेजों को लगभग इतना धन प्राप्त हुआ कि लगभग एक सौ नावों का प्रयोग करना पड़ा।
3) इस युद्ध से अंग्रेजी कंपनी व्यापारिक न रहकर राजनीतिक सत्ता बन गई।
4) इस युद्ध के बाद अंग्रेजों का भारत में विजय अभियान का आरंभ हो गया।
5) इस युद्ध से कम्पनी का मान सम्मान बढ़ा।

* आर्थिक महत्व :-

1) इस युद्ध के बाद कम्पनी की आर्थिक दशा सुधरनी आरम्भ हो गई।
2) इस युद्ध से अकेले क्लाइव को ही लगभग 30 लाख रु० प्राप्त हुए।
3) अंग्रेजों को बंगाल में कर मुक्त व्यापार करने की सुविधा प्राप्त हुई।
4) युद्ध के बाद उनके साधनों में बढ़ोत्तरी हुई।
5) कम्पनी ने बंगाल में अपना टकसाल स्थापित किया।

Scanned with OKEN Scanner

* नैतिक महत्व :-

1) इस युद्ध में कम्पनी द्वारा हुई लूट से अंग्रेजों की लोभ की प्रवृत्ति बढ़ी।
2) लोभ पूर्ण करने के लिए अंग्रेजों ने भारतीयों के साथ अमानुषिक कार्य भी करने आरंभ किए।
3) इस युद्ध के बाद कम्पनी में भ्रष्टाचार बढ़ा।
4) इस युद्ध की समाप्ति पर अंग्रेजों का नैतिक पतन होना आरम्भ हो गया।

* निष्कर्ष :-

कहा जा सकता है कि इस युद्ध ने भारत में अनेक क्रांतियों को जन्म दिया। इस युद्ध के बाद यह कम्पनी फ्रांसीसी व अन्य कम्पनियों को भारत में हराने में सफल हुई।

Question 1857 की क्रांति के कारण, घटनाएँ एवं परिणामों का वर्णन करें।

* भूमिका :-

गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग के शासनकाल में घटित होने वाली 1857 ई० की क्रान्ति भारतीय इतिहास की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना थी। इस घटना को भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, 'महान क्रान्ति, सैनिक विद्रोह, एवं हिंदू मुस्लिम संगठित षड्यन्त्र आदि नामों से जाना जाता है।

* क्रांति के कारण :-

वास्तव में इस क्रांति के अनेक कारण थे परन्तु सीधे तौर पर इसका मूल कारण पिछले 100 वर्षों से जारी ब्रिटिश शासन की शोषणकारी नीतियाँ थी।

* राजनीतिक कारण :-

राजनीतिक कारण निम्नलिखित है,

* लार्ड डलहौजी की लैप्स की नीति :-

इस नीति के अनुसार भारतीय राजा निःसंतान होने पर किसी को गोद नहीं ले सकता था तथा उसके निःसंतान मरने पर उसका राज्य ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया जाता था। इस नियम के अनुसार डलहौजी ने सतारा, नागपुर, झांसी, संभलपुर, जैतपुर, उदयपुर तथा बघाट व नागपुर आदि राज्यों का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय कर लिया था।

Scanned with OKEN Scanner

* पेन्शनों एवं उपाधियों की समाप्ति :-

अंग्रेजों ने भारतीय शासकों तथा नवाबों को पूर्णतः शक्तिहीन कर देने के उद्देश्य से संबंधित शासकों की मृत्यु के पश्चात उनके उत्तराधिकारी को इन उपाधियों एवं पेन्शनों से मुक्त कर दिया। जिससे वे अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध विद्रोह करने को मजबूर हो गए।

* बेरोजगार सैनिक :-

अंग्रेजों ने अनेक भारतीय राज्यों को अंग्रेजी साम्राज्य में मिलाने के बाद उनकी सेनाओं को भंग कर दिया। परिणामस्वरूप हजारों सैनिक बेरोजगार हो गये और क्रान्तिकारियों से मिल गए।

* प्रशासनिक कारण :-

क्रांति के प्रशासनिक कारण निम्नलिखित है —

* भारतीयों को उच्च पदों से वंचित करना :-

अंग्रेजों ने आरंभ से ही प्रशासन में भेदभाव की नीति अपनाई। 1857 ई० से पहले नागरिक सेवाओं में एक भारतीय को मिलने वाला अच्छा से अच्छा पद 'सदर अमीन' तथा सैनिक सेवाओं में 'सूबेदार' था अतः शिक्षित तथा योग्य भारतीय के ब्रिटिश शासन के प्रति असन्तोष पनपा।

* अंग्रेज अधिकारियों का दुर्व्यवहार :-

अंग्रेजी अधिकारी वर्ग अपने आप को भारतीय कर्मचारियों से पूरी तरह अलग रखता था तथा हर प्रकार से उन्हें अपमानित करता था। जिससे भारतीय जनता का गुस्सा भड़क उठा।

* आर्थिक कारण :-

क्रांति के आर्थिक कारण निम्नलिखित है -

* भारत का आर्थिक शोषण :-

अंग्रेजों ने जितना भारतीयों का राजनीतिक शोषण किया, उससे भी बढ़कर आर्थिक शोषण किया। अंग्रेजों ने भारतीय व्यापार, वाणिज्य एवं उद्योगों को अपने हाथों में ले लिया अतः भारतीयों की निर्धनता बड़ी तेजी से बढ़ने लगी।

* भूराजस्व में वृद्धि :-

व्यवस्था स्थापित करने के लिए धन की आवश्यकता थी जो उन्हें भू-राजस्व से मिल जाता था। किसानों से प्राप्त लगान का 10/11 भाग कंपनी लेती थी तथा लगान न देने वाले किसानों की जमीनें नीलाम कर दी जाती थी।

* सैनिक कारण :-

सैनिक कारण निम्नलिखित है।

* भारतीय सैनिक के साथ भेदभाव :-

भारतीय सैनिकों के साथ अनेक मामलों में भेदभाव

किया जाता था। उन्हें अंग्रेज सैनिकों की तुलना में वेतन, भत्ते एवं पदोन्नति बहुत कम मिलते थे। सेना में एक भारतीय सूबेदार का वेतन 35 रु था। जबकि अंग्रेज सूबेदार का वेतन 135 रुपया था।

* तत्कालिक कारण - चर्बी वाले कारतूस :-

भारतीयों में यह विश्वास दृढ़ होता जा रहा था कि अंग्रेज भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को नष्ट करना चाहते हैं। 1856 में आई नई इनफील्ड राइफल नामक बंदूक में जो कारतूस प्रयोग होते थे उनमें गाय व सुअर की चर्बी का प्रयोग होने की अफवाह फैल गई जिससे हिंदू व मुसलमान दोनों भड़क उठे और विद्रोह प्रारंभ हो गया।

* प्रसार व मुख्य घटनाएँ :-

1857 की क्रांति का प्रसार व मुख्य घटनाएँ निम्नलिखित है -

* बैरकपुर :-

क्रांति का आरंभ 27 मार्च 1857 को बंगाल में बैरकपुर छावनी से हुआ। 34 वी रेजीमेंट के एक ब्राह्मण सैनिक मंगल पांडे ने चर्बी वाले कारतूस का प्रयोग करने से इंकार कर दिया तथा उसने अंग्रेजी अधिकारी पर गोली चला दी।

Scanned with OKEN Scanner

Date: / /

* मेरठ :-

24 अप्रैल 1857 को घुड़सवार सैनिकों की एक टुकड़ी ने कारतूसों का प्रयोग करने से इंकार कर दिया। इन सैनिकों को 5 वर्ष की सजा सुनाई गई और 9 मई को अपराधियों के कपड़े पहनाकर बेड़ियां लगा दी गई। 10 मई को सैनिकों को सजा दिए जाने से क्षुब्ध सैनिकों ने कई अंग्रेज अधिकारी को मौत के घाट उतार दिया और दिल्ली की तरफ चल दिए।

* दिल्ली :-

11 मई 1857 को दो हजार सैनिक मेरठ से दिल्ली पहुँचे। यहाँ पर उन्होंने अनेक अंग्रेज अधिकारीयों को मार डाला। दिल्ली पर अधिकार करने के पश्चात क्रान्तिकारियों ने मुगल सम्राट बहादुरशाह से क्रान्ति का नेतृत्व करने का अनुरोध किया।

* लखनऊ :-

क्रांतिकारियों ने वाजिद अलीशाह के दो वर्षीय पुत्र बिरजिस कादिर को नवाब घोषित कर दिया तथा प्रशासन संचालन का काम बेगम हजरत महल को सौंप दिया। क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजी रेजीडेंसी को घेरकर कब्जा कर लिया तथा चीफ कमिश्नर हेनरी लारेंस को मौत के घाट उतार दिया। अवध की राजधानी लखनऊ में क्रान्ति ने सबसे भीषण रूप धारण किया था।

Scanned with OKEN Scanner

Date: / /

* क्रान्ति की असफलता के कारण :-

असफलता के निम्नलिखित कारण हैं —

* क्रान्ति का निश्चित तिथि से पूर्व प्रारंभ होना :-

31 मई को यूरोपीय अधिकारी की हत्या करके क्रान्ति की योजना बनी परन्तु चर्बी वाले कारतूस की घटना ने बैरकपुर में सैनिकों ने विद्रोह कर दिया था तथा उसके पश्चात मंगल पांडे को फाँसी दी गई जिससे तिथि से पहले ही क्रान्ति का विस्फोट कर दिया।

* क्रान्ति का सीमित क्षेत्र :-

क्रान्ति का प्रसार अधिकतर उत्तर भारत में हुआ तथा उत्तर भारत के भी कई भागों जैसे पंजाब का उत्तरी भाग, पूर्वी बंगाल, राजपूताना, गुजरात आदि क्रान्ति से अलग रहा। नर्मदा के दक्षिण का भाग पूर्णता से शांत रहा।

* योग्य एवं कुशल नेतृत्व का अभाव :-

क्रान्ति को ठीक तरह से संचालित करने वाला कोई योग्य नेता नहीं था। वे एक-दूसरे के प्रति संदेहास्पद रहे। रानी लक्ष्मीबाई में कुशल एवं योग्य नेतृत्व के गुण थे। परन्तु वह स्त्री होने के कारण विद्रोहियों को

Scanned with OKEN Scanner

संगठित करके उन्हें नेतृत्व प्रदान नहीं कर पाई।

* क्रान्ति के परिणाम :-

यद्यपि 1857 का विप्लव असफल रहा, किन्तु इसके अग्रलपूर्ण परिणाम व व्यापक और स्थायी सिद्ध हुए। विवरण इस प्रकार है —

* भारत पर ब्रिटिश ताज का प्रत्यक्ष शासन :-

क्रान्ति के पश्चात नवम्बर 1858 ई० की महारानी की घोषणा के अनुसार कम्पनी का राज्य समाप्त करके भारत का राज्य ताज के अधीन कर दिया गया।

* मुगल वंश का अन्त :-

दिल्ली में मुगल सम्राट बहादुर शाह ने क्रान्तिकारियों का नेतृत्व प्रदान किया गया था। क्रान्ति के दमन के साथ अंग्रेजों ने बहादुरशाह को बंदी बनाकर 'रंगून' भेज दिया और उसके परिवार को मौत के घाट उतार दिया।

* साम्प्रदायिकता एवं घृणा की उत्पत्ति :-

1857 की क्रान्ति में हिन्दुओं व मुसलमानों ने संगठित रूप से भाग लिया। अंग्रेजों ने 'फूट डालो राज करो' की नीति ने इनमें वैमनस्य उत्पन्न करवा दिया। जिससे इनमें एक-दूसरे के प्रति घृणा उत्पन्न हुई।

Scanned with OKEN Scanner

Date: / /

संगठित करके उन्हें नेतृत्व प्रदान नहीं कर पाई।

* क्रान्ति के परिणाम :-

यद्यपि 1857 का विप्लव असफल रहा, किन्तु इसके अभूतपूर्ण परिणाम व्यापक और स्थायी सिद्ध हुए। विवरण इस प्रकार है —

* भारत पर ब्रिटिश ताज का प्रत्यक्ष शासन :-

क्रान्ति के पश्चात नवम्बर 1858 ई० की महारानी की घोषणा के अनुसार कम्पनी का राज्य समाप्त करके भारत का राज्य ताज के अधीन कर दिया गया।

* मुगल वंश का अन्त :-

दिल्ली में मुगल सम्राट बहादुर शाह ने क्रान्तिकारियों को नेतृत्व प्रदान किया गया था। क्रांन्ति के दमन के साथ अंग्रेजों ने बहादुरशाह को बंदी बनाकर 'रंगून' भेज दिया और उसके परिवार को मौत के घाट उतार दिया।

* साम्प्रदायिकता एवं घृणा की उत्पत्ति :-

1857 की क्रान्ति में हिन्दुओं व मुसलमानों ने संगठित रूप से भाग लिया। अंग्रेजों ने 'फूट डालो राज करो' की नीति ने इनमें वैमनस्य उत्पन्न करवा दिया। जिससे इनमें एक-दूसरे के प्रति घृणा उत्पन्न हुई।

* क्रान्ति का स्वरूप :-

1857 की क्रान्ति के संबंध में इतिहासकारों में बड़ा मतभेद रहा है —

* सैनिक विद्रोह :-

अनेक यूरोपीय इतिहासकारों ने 1857 की क्रान्ति को केवल सैनिक विद्रोह बताया है —

* पक्ष में मत —

1) केवल उत्तर भारत तक सीमित।
2) विद्रोह का प्रारंभ सैनिक छावनीयों से हुआ।
3) तत्कालिक कारण का संबंध (चर्बी वाले कारतूस) सीधा सैनिकों से था।

* विरोधी मत / आलोचना :-

1) सेना का एक भाग सरकार का पक्षधर था।
2) सैनिकों के अलावा आम आदमियों ने भी भाग लिया।
3) असफलता के बाद मुकदमे हजारों आम आदमियों पर भी चले।

* प्रथम स्वतंत्रता संग्राम :-

भारतीय इतिहासकारों तथा विद्वानों ने 1857 ई० की क्रांति को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की संज्ञा दी जिसमें वी० डी० सावरकर, अशोक मेहता ने इसे संगठित राष्ट्रीय आंदोलन कहा है।

Date: / /

* पक्ष में मत :-

1) यह क्रांति बहुत शीघ्र आरंभ हो गई थी तथा कई महीनों तक चलती रही।
2) यह पिछले 100 वर्षों के दौरान ईस्ट इंडिया कंपनी के शोषण से उत्पन्न भारतीय असंतोष के कारण फूटा था।
3) इस संघर्ष में हिन्दुओं तथा मुसलमानों ने संयुक्त रूप से भाग लिया था।
4) उद्देश्यों में समानता थी। अंग्रेजी राज की समाप्ति तथा अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालना

* निष्कर्ष :-

1857 की क्रांति भारतीय इतिहास की प्रेरणादायक घटना है। जिसने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिला दिया। यद्यपि क्रान्तिकारियों ने 1857 की क्रान्ति में ब्रिटिश सरकार तथा शासन प्रणाली को कुछ समय के लिए उखाड़ फेंका परंतु उनको इसमें स्थायी सफलता प्राप्त नहीं हुई।

Question

* आर्य समाज या स्वामी दयानंद पर नोट लिखें।

* **भूमिका** :- 19 वीं सदी के धार्मिक व सामाजिक आन्दोलन में आर्यसमाज का भी अपना अलग से महत्व है। इसकी स्थापना दयानन्द सरस्वती ने 1875 में बम्बई में की थी। इसका आधार वैदिक धर्म था उस समय हिंदुओं की दशा बहुत खराब थी।

* **दयानन्द सरस्वती जी का जन्म** :- स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जन्म 1824 में गुजरात के मौरवी क्षेत्र के निकट टंकारा नामक स्थान पर हुआ था। उनका बचपन का नाम मूल शंकर था। पिता का नाम अम्बा शंकर था। इन्होंने 1860 में मथुरा में स्वामी विरजानन्द को अपना गुरु बनाया और वेदों का ज्ञान प्राप्त किया। इसके बाद गुरु के आदेश पर समाज में फैली बुराईयों को दूर करने के लिए जीवन भर लगे रहे। दयानंद जी हिन्दी भाषा व वैदिक सभ्यता के समर्थक थे।

Date: / /

* आर्यसमाज के सिद्धान्त * :-

स्वामी दयानंद सरस्वती जी के आर्यसमाज के सिद्धांत निम्नलिखित है —

1) ईश्वर ही ज्ञान का कारण है। सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

2) वेद सब रूप विद्याओं की प्रस्तुति है। इसलिए सब आर्यों का यह धर्म है कि वह सब वेद को पढ़ें एवं सुनें।

3) सत्य को ग्रहण करने एवं असत्य को छोड़ने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

4) सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए।

5) अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

6) सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य पर विचार करके करने चाहिए।

7) प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट नहीं रहना चाहिए। बल्कि सबकी उन्नति को अपनी उन्नति समझना चाहिए।

8) संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।

Scanned with OKEN Scanner

* आर्यसमाज के सुधार :-

आर्यसमाज के सुधार निम्नलिखित है -

* सामाजिक सुधार :-

स्वामी दयानन्द ने समाज के क्षेत्र में बहुत सुधार किए जैसे कि उन्होंने बाल-विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, जाति प्रथा आदि का घोर विरोध किया और विधवा-विवाह, स्त्री शिक्षा आदि का समर्थन किया। उन्होंने लड़कों के लिए 25 और लड़कियों के लिए 16 वर्ष विवाह की आयु निर्धारित की।

* शुद्धि आंदोलन :-

स्वामी जी ने शुद्धि आंदोलन चलाया जिसमें धन या बलपूर्वक हिंदुओं को मुस्लिम या ईसाई बनाया गया था। उनको पुनः हिन्दू धर्म ग्रहण करवा दिया जाता था। इसके कारण लाखों हिन्दू पुनः हिन्दू धर्म में लौट आए।

* धार्मिक क्षेत्र में सुधार :-

स्वामी जी ने हिन्दू धर्म में फैली मूर्ति-पूजा, बलि-प्रथा, अनेक मत-मतान्तरों, अवतारवाद और अन्धविश्वासों का विरोध किया तथा यज्ञ, हवन और मन्त्रपाठ आदि का समर्थन किया।

* साहित्यिक व शैक्षणिक सुधार :-

इस क्षेत्र में भी स्वामी जी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने अनेक ग्रंथ हिन्दी भाषा में लिखकर हिन्दी का गौरव बढ़ाया। वे स्त्री शिक्षा के समर्थक थे और उन्हीं के कारण संस्कृत का महत्व पुनः स्थापित हो सका था। वे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के समर्थक थे। ताकि शिक्षा के साथ-साथ ब्रह्मचर्य धर्म का भी पालन हो सके। वे आश्रम-व्यवस्था के भी पक्षधर थे। उन्होंने 1900 ई० में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की जो आगे चलकर विश्वविद्यालय बन गया।

* राष्ट्रीय सुधार :-

स्वामी जी ने हिन्दू जातियों में नव चेतना का संचार किया जिससे हिन्दुओं में आत्म-सम्मान की भावना पैदा हुई। उन्होंने कहा की हिंदू संस्कृति संसार में श्रेष्ठ है।
आर्यसमाज ने नमस्ते शब्द प्रचलित किया था जो आज भी संसार में लोकप्रियता के शिखर पर है।
स्वामी जी ने भारतीय जनता में राजनीतिक जागृति पैदा करने का भी कार्य किया।

Date: / /

दयानन्द का मुख्य ध्येय राजनीतिक स्वतंत्रता था। वह पहला व्यक्ति था जिसने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया और हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया।

* निष्कर्ष :- इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आधुनिक भारत के निर्माताओं में जिन लोगों ने जनता के आध्यात्मिक विकास में योगदान दिया और देश-भक्ति तथा देश-प्रेम की अग्नि को प्रज्वलित किया, उनमें दयानन्द का प्रमुख स्थान है।

Question -

राजा राम मोहन राय अथवा ब्रह्मसमाज पर नोट लिखें ।

* भूमिका :-

19 वीं सदी में प्रथम सामाजिक तथा धर्म सुधार आन्दोलन राजा राम मोहन राय के नेतृत्व में आरम्भ हुआ । उन्होंने ही ब्रह्मसमाज की स्थापना की । यह आन्दोलन यूरोप की संस्कृति तथा धर्म से प्रभावित हिंदू धर्म का एक नया रूप था ।

* राजा राममोहन राय :-

ये पहले भारतीय थे जिन्होंने सुधारवादी आन्दोलन की नींव डाली । उनको नवजागरण का अग्रदूत, नवीन युग का प्रवर्तक, भारतीय राष्ट्रीयता के दूत और आधुनिक भारत के निर्माता के नाम से भी पुकारा जाता है ।

* उनका जन्म :-

उनका जन्म 22 मई 1774 में बंगाल के वर्धमान जिले के राधानगर गाँव में हुआ था । वे एक ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए । ये मूर्ति पूजा के सख्त विरोधी थे । वे अंग्रेजी शिक्षा से प्रभावित थे । 1830 में वे इंग्लैण्ड गए जहाँ 27 Sept 1833 को उनका देहान्त हो गया ।

Date: / /

* ब्रह्मसमाज के सिद्धान्त :- इसके सिद्धान्त निम्नलिखित हैं —

1) इसमें मूर्ति-पूजा का विरोध किया गया था।
2) इसका अवतारवाद में विश्वास नहीं था
3) इसमें मंदिर तीर्थ के लिए कोई जगह नहीं थी।
4) उनका दृष्टिकोण बहुत ही उदार और तर्कसंगत था। वे सिर्फ उसी बात को स्वीकार करते थे जो कि बुद्धिवाद की कसौटी पर खरी उतरती हो।
5) वे एकेश्वरवाद में विश्वास रखते थे।
6) वे विश्वबन्धुता के सिद्धान्त में विश्वास रखते थे।

* उनके द्वारा किए गए सुधार :- राजा राममोहन राय द्वारा किए गए सुधार निम्नलिखित हैं —

* धार्मिक सुधार :- उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला की सभी धर्मों में सत्यता है और ईश्वर एक है। उन्होंने कर्मकाण्ड, जाति प्रथा, मूर्ति-पूजा आदि का खंडन किया है।
उन्होंने 1815 में आत्मीय सभा और 1816 में वेदान्त कॉलेज की स्थापना कलकत्ता में की थी।

Scanned with OKEN Scanner

Date: / /

जहाँ पर हिन्दू धर्म के प्रचार कार्य पर बल दिया जाता था।

* सामाजिक सुधार :-

उन्होंने समाज में फैली जाति-प्रथा, पर्दा प्रथा, छुआछूत, बाल-विवाह, बहु विवाह, सती प्रथा, बाल-हत्या का सख्त विरोध किया। उन्होंने जब अपनी भाभी को सती होते देखा तो इस प्रथा के खिलाफ भयंकर आंदोलन छेड़ दिया। 1829 में लार्ड विलियम बैंटिंक की सहायता से इस प्रथा पर रोक लगवा दी।

* राष्ट्रीय सुधार :-

उन्होंने हिन्दू कानून में सुधार करने की मांग की। स्त्री सम्पत्ति के अधिकार की वकालत की। प्रेस पर लगे प्रतिबन्ध का विरोध किया। वे न्याय में जूरी प्रथा के समर्थक थे। उन्होंने न्यायालयों की भाषा फारसी से अंग्रेजी की जाने की प्रार्थना की।

* शैक्षणिक सुधार :-

वे पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित व्यक्ति थे और उनकी शिक्षा के समर्थक भी। उनके कारण ही कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना हुई। उन्होंने इस भ्रम का भी निवारण किया की अंग्रेजी पढ़कर लोग ईसाई बन जाते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

Date: / /

Question -

अंग्रेजों की भू- कर प्रणाली का वर्णन करें -

* भूमिका :- बंगाल विजय तथा इलाहाबाद की सन्धि के बाद लगान वसूली का कार्य कम्पनी के अधीन आ गया। इसके बाद भू- राजस्व क्षेत्र में कंपनी के द्वारा अनेक बंदोबस्त किए गए। भू- राजस्व के क्षेत्र में किए गए इन सुधारों का अध्ययन हम मुख्य रूप से तीन शीर्षक के अन्तर्गत कर सकते हैं।

1) स्थायी बंदोबस्त
2) रैयतवाड़ी बंदोबस्त / प्रणाली
3) महालवाड़ी प्रणाली

* स्थायी बन्दोबस्त :-

1789 में जब कार्नवालिस गवर्नर जनरल बनकर भारत आया तो भारत में भूमि की स्थिति बड़ी खराब थी। लार्ड कार्नवालिस ने सात साल तक वहाँ की समस्याओं पर विचार किया फिर उसके बाद अपनी नीति की घोषणा की जो स्थाई बंदोबस्त के नाम से जानी जाती है।

Scanned with OKEN Scanner

Date: / /

* प्रमुख प्रावधान * :- इसके प्रमुख प्रावधान इस प्रकार हैं —

1) जमीदारों को भूमि का स्वामी मान लिया गया।
2) 1793 में जो भू-स्वामी थे, उन्हें ये अधिकार दे दिए गए।
3) जमीदारों को लगाव की निश्चित रकम का 89 प्रतिशत सरकार के पास जमा करवाना था।
4) जमीदारों के न्यायिक अधिकार समाप्त हो गए थे।

* उद्देश्य :- इसके उद्देश्य निम्नलिखित थे)

1) भूमि की उर्वरता में वृद्धि हो ताकि उत्पादन बढ़े।
2) किसानों को शोषण पर रोक लगाई जा सके।
3) कम्पनी की आर्थिक स्थिति में सुधार लाया जाए।

* प्रभाव :- इसके प्रभाव निम्नलिखित हैं —

1) कृषकों से भूमि का स्वामित्व लेकर जमीदारों को सौंप दिया गया। कृषकों की स्थिति अब केवल किराएदार की रह गई थी।
2) भूमि का स्वामित्व जमीदारों के हाथों में आ गया।

Scanned with OKEN Scanner

Date: / /

3) इससे कम्पनी की आय निश्चित हो गई। अब कम्पनी के अधिकारी आमदनी के अनुसार व्यय कर सकते थे।

4) इससे नए सामाजिक वर्गों का उदय हुआ। मध्यस्थों, महाजनों, वकीलों आदि के नए वर्ग अस्तित्व में आए।

* **रैयतवाड़ी व्यवस्था / प्रणाली :-** मद्रास प्रान्त के बारा महल जिले में सर्वप्रथम 1792 ई० में भू-राजस्व की यह प्रणाली कैप्टन रीड तथा थॉमस मुनरो द्वारा लागू की गई। वास्तव में थॉमस मुनरो ही इस प्रणाली का प्रवर्तक था। 1820 में जब वे मद्रास का गवर्नर बना तो उसने इसे मद्रास व बम्बई प्रान्त में भी प्रचलित कर दिया।

* **प्रमुख प्रावधान :-** निम्नलिखित हैं –

1) जमींदारों के स्थान पर सीधे कृषकों के साथ लगान दर के विषय में समझौते किए गए।

2) किसानों को भूमि का स्वामी स्वीकार किया गया।

3) भू-राजस्व का निर्धारण प्रति एकड़ की उपज के आधार पर किया गया।

4) जब तक एक कृषक नियमित रूप से लगान अदा करता रहेगा उसे उसकी भूमि से बेदखल नहीं किया जाएगा।

Date: / /

* कारण :-

1) बंगाल में लागू किए गए स्थायी बन्दोबस्त के दोष सामने आने प्रारम्भ हो गए थे।
2) मुनरो जमींदार तथा ठेकेदारों का एक अलग वर्ग बनाने के विरुद्ध था। मद्रास प्रान्त में बंगाल के समान ऐसे बड़े जमींदार नहीं थे जिनसे सम्मौता किया जा सके।

* प्रभाव :- उसके प्रभाव निम्नलिखित हैं-

1) एक लम्बी अवधि के लिए लगान की दर निश्चित हो गई।
2) वह भूमि की उन्नति के लिए कार्य कर सकता था।
3) कृषकों को भूमि का स्वामी मान लिया गया। अब भूमि उसकी व्यक्तिगत सम्पत्ति थी जिसे वह बेच सकता था, गिरवी रख सकता था अथवा कुछ समय के लिए ठेके पर दे सकता था।
4) वह जमींदारों तथा मध्यस्थों के चुंगल से बच सकता था।
5) सरकार कृषि उत्पादों की कीमतें बढ़ने पर लगान की दरें बढ़ा सकती थी।
6) सारी अनधिकृत भूमि अब सरकार के अधिकार में आ गई थी।

Date: / /

* महालवाड़ी प्रणाली :-

इस पद्धति के अन्तर्गत भूमि कर की इकाई किसान का खेत नहीं, वरन ग्राम अथवा महल होता था। इसमें भूमि समस्त ग्राम सभा की सम्मिलित रूप से होती थी, जिसको भागीदारों का समूह कहते थे। ये भागीदार सम्मिलित रूप से भूमिकर अदा करने के लिए उत्तरदायी होते थे, परन्तु इसके साथ व्यक्तिगत, उत्तरदायित्व भी होता था।

* प्रमुख प्रावधान :-

इसके प्रमुख प्रावधान निम्नलिखित हैं -

1) कृषक निश्चित अवधि तक सरकार से समझौता करने वाले को अपना लगान चुकाते थे।
2) प्रत्येक कृषक द्वारा दिया जाने वाला लगान भी निश्चित किया जाता था।
3) कुछ स्थानों पर बीस और कुछ स्थानों पर तीस वर्ष के लिए समझौते किए गए।
4) कृषकों को अपनी भूमि बेचने व गिरवी रखने के अधिकार दिए गए।

* प्रभाव (किसानों पर) :-

इसके किसानों पर पड़े प्रभाव निम्नलिखित हैं -

1) किसानों को भू-स्वामी मान लिया गया।
2) किसान अपनी भूमि की उन्नति कर सकता था क्योंकि अब उसे लाभ का एक अंश मिलता था।

Scanned with OKEN Scanner

Date: / /

Question

19 वीं शताब्दी में राष्ट्रवाद के उदय, चेतना एवं विकास का वर्णन करें।

* **भूमिका :-**

देश के विभिन्न भागों में 19 वी शताब्दी में 'बंगाल ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन', 'पूना सार्वजनिक सभा', बम्बई प्रेसीडेन्सी एसोसिएशन, जैसी संस्थाओं का उदय हुआ। इनसे निरन्तर विकसित होती राष्ट्रीयता की भावना के परिणामस्वरूप 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस की स्थापना हुई। कॉंग्रेस ने भारतीय लोगों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया तथा अन्त में उन्हें राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त कराई व भारत एक 'राष्ट्र' बन सका।

* **राष्ट्रीय चेतना के उदय एवं विकास के कारण :-**

राष्ट्रीय चेतना का उदय तथा विकास आधुनिक भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण तथा मनोरंजक घटना मानी जाती है। अनेक कारणों ने मिलकर राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न की। इन कारणों का विवरण इस प्रकार है —

* **विदेशी शासन के प्रभाव :-**

अंग्रेज सौदागरों का मुख्य लक्ष्य भारत का आर्थिक शोषण करना था। उन्होंने कभी भी भारत को अपना स्थाई घर नहीं समझा बल्कि भारत के धन का प्रयोग अंग्रेजी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए किया।

Scanned with OKEN Scanner

1764 के 'बक्सर युद्ध' में विजय प्राप्त करने के पश्चात अंग्रेजों का बंगाल पर अधिकार हो गया। उन्होंने राजनीतिक प्रभुता की ओट में जी भर कर आर्थिक शोषण करना प्रारंभ कर दिया। 1858 के पश्चात जब भारत का प्रशासन ब्रिटिश सरकार के अधीन चला गया तो ब्रिटिश सरकार ने भी आर्थिक शोषण उसी प्रकार जारी रखा। अंग्रेजों द्वारा किए जाने वाले शोषण के विरुद्ध धीरे-धीरे भारतीयों में चेतना जाग्रत हुई तथा वे इस शासन को समाप्त करने के बारे में सोचने लगे।

* राजनीतिक एवं आर्थिक एकता की स्थापना :-

अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारत में राजनीतिक एकता का अभाव था। अंग्रेजी शासन के परिणामस्वरूप भारत में एक-सी कानून व्यवस्था, न्यायिक प्रणाली, मुद्रा प्रणाली, दण्ड संहिता, कानून-व्यवस्था स्थापित हुई जिससे राजनीतिक एकता की स्थापना हुई। और भारतीय अर्थव्यवस्था ब्रिटिश पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का अंग बन गई थी।

* धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आंदोलन :-

19 वीं सदी में प्रारंभ होने वाले धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आंदोलनों ने जहां एक तरफ भारतीय धर्म तथा समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया तो दूसरी तरफ भारतीय राष्ट्रीय चेतना के उदय

Date: / /

तथा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

* पश्चिमी विचारों एवं शिक्षा का प्रभाव :-

भारत में अंग्रेजी भाषा के महत्व को बढ़ाने के लिए 1835 ई० में लार्ड मैकाले की सिफारिश पर विलियम बैंटिक ने इसे लागू किया। यद्यपि इसके पीछे मैकाले का उद्देश्य भारतीयों को मानसिक रूप से सदा के लिए गुलाम बनाना था। अंग्रेजी भाषा कभी भी जन साधारण की भाषा नहीं बनी जिससे शिक्षित वर्ग और जनसाधारण के बीच भाषा की दीवार बनी रही।

* भारतीय समाचार-पत्र एवं साहित्य :-

आधुनिक शिक्षा प्रणाली के परिणामस्वरूप भारत में कुछ नये सामाजिक वर्गों का उत्थान हुआ जिनमें शिक्षित मध्यम वर्ग प्रमुख है। इसी वर्ग ने भारत में प्रेस एवं साहित्य के उदय का मार्ग प्रशस्त किया। भारतीय समाचार-पत्रों तथा साहित्य ने राष्ट्रीय आंदोलन की प्रगति तथा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

* जाति विभेद की नीति :-

19 वीं सदी में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के उदय एवं विकास का एक प्रमुख कारण अंग्रेजों की रंगभेद की नीति एवं भारतीयों के प्रति उनकी निरादर की भावना थी। अंग्रेज

Scanned with OKEN Scanner

Date: / /

समूची यूरोपिय जाती को एशियाई जाती से ऊँची मानते थे तथा वे ये चाहते थे की भारतीय भी इस बात को स्वीकार करें की अंग्रेजी सभ्यता और संस्कृति भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति से श्रेष्ठ है।

* **सरकारी नौकरियों में पक्षपात :**

मध्य एवं उच्च वर्ग के अंग्रेज नागरिक भारत में उच्च पदों को अपने पुत्रों के लिए सुरक्षित समझते थे। यद्यपि 1833 के चार्टर एक्ट एवं 1858 की महारानी विक्टोरिया की घोषणा में यह कहा गया था कि सरकारी नौकरियों में नियुक्ति योग्यता के अनुसार होगी। परंतु वास्तविकता यह थी की भारतीय बुद्धिजीवितों को उच्च सरकारी पदों से वंचित रहना पड़ता था।

* **विदेशी घटनाओं का प्रभाव :**

अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं ने भी भारतीय आंदोलन के जन्म में काफी सहायता दी। 19 वी सदी के राष्ट्रीय आंदोलनों को अमेरिका की स्वाधीनता 1776 तथा फ्रांसीसी क्रांति 1789 ने काफी हद तक प्रभावित किया। 1820-21 में इटली व 1820-23 में स्पेन में क्रांति हुई।

Date: / /

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना :

राष्ट्रीय हितों के लिए अखिल भारतीय स्तर पर संघर्ष करने का उत्साह दिखाई देने लगा था। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने 1876 में इण्डियन एसोसिएशन का गठन करके प्रथम राष्ट्रीय संस्था की स्थापना की। इस प्रकार एक अखिल भारतीय संगठन की पृष्ठभूमि तैयार हो गई। इसी पृष्ठभूमि पर अन्तत: दिसम्बर 1885 ई० में एक सेवानिवृत्त अंग्रेज अधिकारी ए० ओ० ह्यूम ने इण्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना की।

निष्कर्ष —

अत: हम कह सकते हैं कि भारतीयों को राष्ट्रीय जागृति की प्रेरणा सर्वप्रथम धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आन्दोलनों ने दी। इन्हीं आन्दोलनों ने देशभक्ति तथा स्वाभिमान का बीज बोया। आर्थिक, राजनीतिक तथा अन्य कारणों ने उस बीज को अंकुरित तथा प्रस्फुटित होने में मदद की।

Scanned with OKEN Scanner

Date: / /

Question -

'भारतीय शासन अधिनियम 1935' और उसकी विशेषताओं की आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

* **भूमिका :-**

भारत सरकार अधिनियम 1935 के अन्तर्गत केन्द्र और प्रान्तों की विधायिकाओं के लिए चुनाव की जो व्यवस्था की गई थी, उसके आधार पर चुनावों में भाग लेने के प्रश्न पर कांग्रेस में मतभेद था। एक पक्ष उसमें भाग लेने का समर्थक तो दूसरा उसका विरोधी था। अन्ततः जीत चुनाव में भाग लेने के पक्षधरों की ही हुई। उसने 1935 के चुनावों में भाग लिया और उत्साहवर्धक सफलता प्राप्त हुई।

* **संघीय व्यवस्था की स्थापना :-**

भारत में ब्रिटिश प्रांतों और देशी रियासतों को मिलाकर 'भारत शासन अधिनियम, 1935' के अंतर्गत संघीय व्यवस्था की स्थापना का प्रावधान था। उसमें द्वैध शासन की व्यवस्था की गई थी। जिसमें सभी संघीय विषय दो भागों में विभक्त थे।

* **हस्तान्तरित विषय पर व्ययसराय और मंत्रिपरिषद :-**

दोनों के अधिकार क्षेत्र का प्रावधान था किन्तु

व्यवहारत: मंत्रिपरिषद को केवल परामर्श देने का ही अधिकार था उसे नीतियाँ तय करने तथा स्वतंत्रतापूर्वक कार्य का कोई प्रावधान नहीं दिया गया। इस प्रावधान के अंतर्गत वायसराय को असीमित शक्तियाँ प्रदान की गई तथा उनकी तुलना में संघीय व्यवस्थापिका की शक्तियाँ बहुत कम एवं प्रभावहीन थीं।

* संघीय सभा :-

1935 में जिस संघीय व्यवस्थापिका का प्रावधान किया गया वह द्विसदनात्मक थी। 1. संघीय सभा 2. राज्य परिषद। संघीय सभा का कार्यकाल 5 तथा राज्य परिषद का काल 9 वर्ष निश्चित किया गया था। निम्न सदन अस्थाई तथा उच्च सदन स्थाई, निम्न सदन भंग हो सकता था उच्च सदन नहीं।

* प्रांतीय शासन संबंधि विशेषताएँ :-

प्रांतीय स्वायत्तता तथा पूर्ण उत्तरदायी शासन का प्रावधान इस अधिनियम के अंतर्गत था परंतु स्वायत्ता के बावजूद प्रांतीय सरकार की शक्तियों पर गवर्नर का अंकुश था। जहाँ तक गवर्नर की शक्तियों का प्रश्न था वह कुछ मामलों में मंत्रियों की सलाह से कार्य करता था तथा कुछ में अपने विवेक का इस्तेमाल करता था। उसे प्राप्त विशेषाधिकार निम्न थे —

Date: / /

1) प्रांतीय व्यवस्थापिका का अधिवेशन बुलाना तथा उसकी अवधि में वृद्धि करना।

2) स्वेच्छा से 6 माह के लिए अध्यादेश जारी करना तथा नए अध्यादेश के जारिए उसकी अवधि में वृद्धि करना।

3) प्रांतीय व्यवस्थापिका की स्वीकृति के बिना भी अपने निर्णय से विधि-निर्माण करना।

4) आपातकाल में प्रांतीय शासन पर पूर्ण अधिकार।

5) संविधान की विफलता घोषित कर शासन की सारी शक्तियां को अपने हाथ में केंद्रित करने का अधिकार।

6) प्रांतीय विधानमंडल द्वारा पारित विधेयक पर निषेधाधिकार।

7) मंत्रियों की नियुक्ति और उन्हें हटाना।

8) कार्यकारिणी परिषद के सदस्यों का खुद चयन और पदच्युत करना।

उसके ये विशेषाधिकार पूर्ण थे अर्थात इन पर किसी और का अंकुश नहीं था।

* भारत मंत्री की स्थिति से संबंधित व्यवस्था :-

भारत मंत्री की शक्तियों में भारत सरकार अधिनियम, 1935 के अंतर्गत महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गए, जो इस प्रकार है —

1) जिन विषयों के बारे में गवर्नर अपने मंत्रियों की सलाह से कार्य करते थे, उन पर भारतमंत्री का नियंत्रण खत्म कर दिया गया।

2) भारतमंत्री की परिषद को भंग कर उसके स्थान पर परामर्शदात्री सभा की स्थापना की गई जिसकी सदस्य संख्या कम से कम 3 और अधिक से अधिक 6 निर्धारित की गई थी।

3) इसे ब्रिटिश सम्राट को सलाह तथा जरूरत के अनुसार भारत के वायसराय और प्रांतीय गवर्नरों को आदेश देने का अधिकार प्रदान किया गया।

* अधिनियम की आलोचना :-

यह अधिनियम भारतीयों की आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सका।

1) प्रांतीय स्वायत्ता मात दिखावा थी क्योंकि इसके नाम पर प्रांतों को जो अधिकार दिए गए थे वे, वस्तुतः विधानमंडल और मंत्रिमंडल के न होकर गवर्नरों के थे। गवर्नरों को इतनी शक्ति प्रदान की गई थी की वह विधायिका द्वारा निर्मित कानूनों को रद्द कर उनके स्थान पर अधिनियम बना सकता था।

2) प्रांतीय स्वायत्तता के बावजूद प्रांतों पर वायसराय और केंद्रीय सरकार के नियंत्रण का प्रावधान था।

Scanned with OKEN Scanner

Date: / /

Question

उग्र राष्ट्रवादियों की विचारधारा कार्यप्रणाली एवं प्रगति का वर्णन करें।

* भूमिका :-

कांग्रेस की प्रथम पीढ़ी के लोग (उदारवादी) पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति से काफी प्रभावित थे। लेकिन 20 वीं शताब्दी में एक नई विचारधारा उभर कर सामने आई। ये लोग भारत तथा ब्रिटेन के हितों को परस्पर विरोधी मानते थे। ये ब्रिटिश साम्राज्य के साथ विच्छेद (संबंध) करके स्वशासन की स्थापना करना चाहते थे। इस नई विचारधारा को ही 'उग्र राष्ट्रवाद' की संज्ञा दी गई।

* उद्देश्य - (स्वराज) :->

उग्रवादियों का सर्वप्रथम राजनैतिक उद्देश्य 'स्वराज' की प्राप्ति था। इनके अग्रणी नेता तिलक ने घोषित किया था कि "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है तथा मैं इसे लेकर रहूँगा"। इनका मानना था की ब्रिटिश शासन में सुधार नहीं किया जा सकता, इसका तो अन्त किया जाना चाहिए। इनका मानना था की स्वतंत्रता के बिना व्यक्ति के स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास नहीं हो सकता।

Scanned with OKEN Scanner

Date: / /

* जनता की शक्ति में विश्वास :-

अपने प्रारंभिक चरण में राष्ट्रीय आन्दोलन जन आंदोलन नहीं था तथा न ही उदारवादी नेताओं ने इसे जन आन्दोलन बनाने का प्रयास किया। अतः इस दौर में राष्ट्रीय आंदोलन केवल उच्च वर्ग या उच्च मध्य वर्ग तक ही सीमित था। परंतु इसके विपरीत उग्रवादी नेता जनता की शक्ति को बहुत बड़ी शक्ति मानते थे। उनकी मान्यता था की जनता की शक्ति के सामने कोई भी विशाल-से-विशाल साम्राज्य नहीं टिक सकता।

* ब्रिटेन से संबंधों में अविश्वास :-

उदारवादी भारत तथा ब्रिटेन के संबंधों को भारत के लिए वरदान समझकर उन्हें भारत के लिए लाभदायक मानते थे। इसके विपरीत उग्रवादी ब्रिटिश राज को भारत की सभी समस्याओं की जड़ मानते थे तथा इंग्लैण्ड से संबंध तोड़ना चाहते थे।

* आत्मशक्ति पर बल :-

उग्रराष्ट्रवादियों का संवैधानिक तरीकों में विश्वास नहीं था। वे याचना करके अपनी मांगें मनवाना पसन्द नहीं करते थे। इस प्रकार की याचनापूर्ण नीति को उन्होंने 'राजनीतिक भिक्षावृत्ति' की संज्ञा दी थी

उनका विचार था कि प्रार्थना करने से या भीख मांगने से राजनीतिक सत्ता प्राप्त नहीं होती। वे आत्म विश्वास एवं आत्म-शक्ति के आधार पर स्वावलम्बन चाहते थे।

* उग्रवादियों की कार्यप्रणाली :-

उग्रवादियों का उदारवादियों की भांति संवैधानिक साधनों, प्रार्थना-पत्रों, स्मरण-पत्रों एवं शिष्टमण्डलों में विश्वास नहीं था। वे संघर्ष द्वारा ही स्वराज्य की प्राप्ति पर बल देते थे।

* निष्क्रिय विरोध :-

उग्रवादियों का मुख्य साधन अथवा उनकी कार्य-प्रणाली का मुख्य ढंग निष्क्रिय विरोध था। इसका अर्थ था सरकार के उस प्रत्येक कार्य का विरोध करना जो जनता के हितों के विपरीत हो अथवा भारतीयों का दमन करने के लिए उठाया गया हो।

* बहिष्कार :-

सक्रिय प्रतिरोध की दो विधियों में से एक थी - बहिष्कार या बायकाट। बहिष्कार का अर्थ था विदेशी वस्तुओं, सरकारी नौकरियों, संस्थानों तथा उपाधियों का बहिष्कार करना। बहिष्कार

Scanned with OKEN Scanner

रूपी अस्त्र प्रयोग करने के बारे में 1905 ई० में बंगाल के समाचार - पत्रों 'संजीवनी' तथा 'अमृत बाजार पत्रिका' में लिखा गया।

* स्वदेशी :-

उग्रवादियों ने सक्रिय विरोध के दूसरे भाग 'स्वदेशी' का भी बहिष्कार के साथ - साथ प्रचार किया। इसका तात्पर्य था विदेशी माल का बहिष्कार करके भारत में बने माल का प्रयोग करना। इसका उद्देश्य था कि इससे भारतीयों को आर्थिक लाभ पहुँचेगा तथा भारतीय शिल्प एवं उद्योगों को पुनर्जीवित किया जा सकेगा।

* राष्ट्रीय की शिक्षा :-

उदारवादियों का झुकाव पाश्चिमी शिक्षा की तरफ था इसके विपरीत उग्रवादियों का झुकाव भारतीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक 'नवजागरण' के प्रतीक थे। वे राष्ट्रीय शिक्षा - प्रणाली के समर्थक थे। उन्होंने अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय शिक्षा को अपना साधन बनाया। उन्होंने कहा हमें ऐसे विद्यालय स्थापित किए जाने चाहिए जहाँ केवल भारतीय संस्कृति, भारतीय इतिहास तथा भारतीय रीति - रिवाजों की शिक्षा दी जाए।

* उग्रवादी आन्दोलन की प्रगति :-

19 वी सदी के अंतिम दशक में कांग्रेस में गरमपंथी विचारधारा का उदय होने लगा था। महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक, बंगाल में अरविंद घोष और बिपिन चंद्र पाल व पंजाब में लाला लाजपत राय उग्रपंथी नेताओं के रूप में उभरकर सामने आए। पंजाब, महाराष्ट्र और बंगाल में विशेष रूप से उग्रवादियों की गतिविधि संचालित हुई इनका विवरण इस प्रकार है —

* महाराष्ट्र :-

महाराष्ट्र में उग्रवादी आंदोलन के प्रमुख प्रणेता तिलक थे। तिलक एक महान देशभक्त तथा स्वतंत्रता प्रेमी थे। उन्होंने अपनी बुद्धि, विद्वता एवं त्याग के द्वारा सम्पूर्ण भारत वर्ष के लोगों को जीता। 'शिवाजी' एवं 'गणपति उत्सव' आरम्भ करके उन्होंने देशभक्ति की भावना उत्पन्न करने के साथ-साथ जनता को संगठित होने तथा अनुशासनपूर्ण कार्य करने की भी प्रेरणा प्रदान की। तिलक जी ने अपने पत्रों के माध्यम से अंग्रेजी सरकार की नीतियों की कड़ी आलोचना की थी।

* बंगाल :-

लार्ड कर्जन के शासनकाल में 19 जुलाई, 1905 को भारतीय राष्ट्रीयता को कुचलने के लिए

बंगाल के विभाजन की घोषणा की गई। यद्यपि इस योजना को वापस लेने के बारे में पहले से ही भारतीय प्रयत्न कर रहे थे परन्तु घोषणा के साथ ही बंगाल में जनता के विरोध ने उग्र रूप धारण कर लिया था। विरोधी आन्दोलन का शुभारम्भ 7 अगस्त 1905 को हुआ। जनसमुदाय ने अंग्रेजी माल के बहिष्कार की शपथ ली। साधुओं व सन्यासियों को भी स्वदेशी का प्रचार करने के लिए प्रेरित किया गया। सरकार ने स्वदेशी एवं बहिष्कार आन्दोलन सख्ती से दबाने का प्रयास किया।

* पंजाब :- पंजाब में 19 वीं सदी के अन्तिम दशक से ही स्वदेशी आन्दोलन चल रहा था। इसमें आर्यसमाज की विशेष भूमिका थी। 1880 के हिन्दी-उर्दू मसले के बाद उग्रवादियों का नेतृत्व लाला लाजपत राय ने किया। उन्होंने अपने पत्र 'पंजाबी' के माध्यम से उग्रवादी विचारधारा का प्रचार किया। सरदार अजीत सिंह ने भी अपने पत्र 'भारतमाता' के माध्यम से पंजाब में उग्रवाद का प्रचार किया। मई 1907 में सरकार ने कठोर कानून बनाकर इस आन्दोलन को सख्ती से दबाने का प्रयास किया।

Date: / /

* मद्रास :-

मद्रास प्रेसीडेंसी के दो क्षेत्रों में उग्रवादी विचारधारा विकसित हुई। ये थे - 'आन्ध्र का मुहाना क्षेत्र' तथा दक्षिण में 'तिरुनेलवेली' जिला। वी० कृष्णास्वामी तथा जी० सुब्रह्मण्यम अय्यर इनके प्रमुख नेता थे। 'हिन्दू' तथा 'प्रकाशम' एवं 'क्रिस्टना पत्रिका' नामक अखबारों के माध्यम से उग्रवादी विचारधारा का मद्रास प्रेजीडेंसी में प्रसार हुआ।

* निष्कर्ष :-

इस प्रकार उग्रवादी नेताओं ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए त्याग एवं बलिदान को अपना प्रबल साधन बनाया। अतः उग्रवादियों के सिद्धान्त तथा साधन बताते हैं कि उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलनों के रूप को निखार दिया और इसमें एक शक्तिशाली मोड़ दिया।

Scanned with OKEN Scanner